जन संपर्क एवं मीडिया समन्वयक कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति 10 जुलाई 2019

क्लेफ्ट लिप समस्या के अध्ययन के लिए बनी इंटरनेशनल टीम में जामिया के अनुसंधानकर्ता शामिल

पैदाइशी तौर पर 'फांक होंठ ':क्लेफ्ट लिपः की समस्या से प्रभावित बच्चों के अध्ययन के लिए गठित एक रिसर्च प्रोजेक्ट में जामिया मिल्लिया इस्लामिया की डेन्टिस्ट्री फैकल्टी के दो सदस्य शामिल किए गए हैं। भारत और ब्रिटेन के कुछ विश्वविद्यालयों की छह सदस्यीय टीम, क्लेफ्ट लिप समस्या पर अनुसंधान करेगी। एसपीएआरसी-यूकेआईईआरआई के तहत इसके लिए एक रिसर्च प्रोजेक्ट शुरू किया गया है।

इस प्रोजेक्ट को '' इवैल्यूऐशन आॅफ क्लेफ्ट केअर आउटकम आॅफ नाॅन-सिंड्रोमिक यूनिलेटरल क्लेफ्ट लिप एंड पैलट:यूसीएलपीः पेशंट एट एजेस 5, 12 एंड 20 अक्रास इंडियाः द क्लेफ्ट केअर इंडिया स्टडी'' नाम दिया गया है।

इसमें, जामिया के डेन्टिस्ट्री फैकल्टी के डा पंचाली बत्रा, इंडियन प्रिंसपल इंवेस्टिगेटर:पीआईः और डा देबोरह सिबिल:पीआईः के अलावा, अन्य सदस्यों में डा दीपक नंदा, इंडियन को-पीआई, वर्दमान महावीर मेडिकल कालेेज, मानचेस्टर विश्वविद्यालय के डा बद्री तिरूवेंकटाचारी, शेफील्ड विश्वविद्यालय के डा मोहित मित्तल:इंटरनेशनल को-पीआईः और मांचेस्टर विश्वविद्यालय के डा अहमद अल-अंगबवी शामिल हैं।

शुरूआती तौर पर इस प्रोजेक्ट के लिए एसपीएआरसी-यूकेआईईआरआई ने तकरीबन 40 लाख रूपयों के अनुदान को मंजूर किया था, जिसमें बाद में 12 लाख रूपयों की बढ़ोतरी की गई। इस प्रोजेक्ट को अगले दो साल में पूरा होना है।

इस अध्ययन का उद्देश्य नाॅन-सिंड्रोमिक यूसीएलपी मरीज़ों के देखभाल का ऐसा मानक तैयार करना है, जो देश के पैमाने पर स्वीकार्य हो और उससे ऐसे मरीज़ो के ईलाज में मदद मिल सके।

हमारे देश में 700 में से एक बच्चा, पैदाइश के वक्त क्लेफ्ट लिप या पैलट: सीएलपीः समस्या के ग्रसित होता है। इस तरह, भारत में हर साल, 27000 से 33000 बच्चे इस समस्या के साथ जन्म लेते हैं। यह अपने आप में बहुत बड़ी परेशानी है क्योंकि, ऐसे बच्चे मानसिक प्रताड़ना में जीते हैं।

भारत में इतने बड़े पैमाने पर यह समस्या होने के बावजूद, ऐसे मरीज़ों की देखभाल और इलाज के तय मानक अभी तक नहीं बने हैं। जानकारी और संसाधनों की कमी के चलते, इनके इलाज में, अस्वीकार्य हद तक देरी होती है। इसके चलते, अक्सर ऐसे छोटे बच्चे, कुपोषण और इंफेक्शन की वजह से दम तोड़ देते हैं। इस क्षेत्र में अनुसंधान के लिए, भारत सरकार ने एसपीएआरसी नामक यह योजना 2018 में शुरू की थी। इससे, इस समस्या से निपटने में शिक्षा और अनुसंधान को एक नई दृष्टि मिली और एमचएचआरडी ने एसपीएआरसी के ज़रिए एक नए कलैबरशेन रिसर्च इकोसिस्टम की शुरूआत की गई।

यूनाईटेड किंग्डम इंडिया एजुकेशन रिसर्च इनिशीअटिव:यूकेआईईआरआईः की शुरूआत अप्रैल 2006 में की गई थी, जिसका मकसद भारत और ब्रिटेन के बीच शिक्षा और अनुसंधान में आपसी सहयोग को बढ़ावा देना है। भारत में क्लेफ्ट लिप की समस्या को 2008 में, मेगन मिलन ने ‘‘स्माइल पिंक ‘‘ नामक अपनी एक मशहूर डाक्यूमेंट्री से उजागर किया था। इसमें दिखाया गया था कि कैसे मुफ्त सर्जरी से, क्लेफ्ट लिप से ग्रसित भारत के एक गांव की गरीब बच्ची की जिन्दगी बदल गई। हिंदी और भोजपुरी में बनी इस डाक्यूमेंट्री को बेस्ट डाक्यूमेंट्री का 81वां अकेडमी अवार्ड मिला था।

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया संयोजक